International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 01-06-2021, Accepted: 16-06-2021, Published: 01-07-2021
Volume 3, Issue 3, 2021, Page No. 01-06

छायावादी कविताओं में मुक्ति का आग्रह

बिद्या दास
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम, भारत

सारांश

हृदयगत भावों को उन्मुक्त कर उसकी स्वच्छन्द अभिव्यक्ति मनुष्य जीवन की सर्वप्रथम मुक्ति है। वस्तुतः छायावादी कवि आरंभ से ही मानव-मुक्ति के पक्षधर रहे हैं। व्यक्तिगत जीवन के सत्य को अभिव्यक्त करने वाले इन कवियों ने अपने जीवन के निजी प्रसंगों, घटनाओं एवं भावनाओं को कविता का केन्द्र बनाया। रूढ़िगत जड़ता से मुक्ति और मुक्ति के लिए विद्रोह जैसे प्रबल भाव को अपनाया। और यह भाव आगे चलकर क्रान्तिकारी चेतना के रूप में परिलक्षित होती है। छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में करूणा, दर्द, पीड़ा, वेदना को रचनात्मक अभिव्यक्ति दी हैं। उनकी कविताओं में मुक्ति का आग्रह प्राचीन रस, छन्द, अलंकार, एवं भाषा-शिल्प के संदर्भ में भी दिखायी पड़ता है।

मूल शब्द: छायावाद, मानव, मुक्ति, विद्रोह

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता में सन् 1918-1936 ई. तक का समय छायावाद के नाम से जाना जाता है। छायावादी काव्यधारा भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन काव्यधाराओं का परवर्ती रूप है। पाश्चात्य साहित्य के रोमैंटिक धारा को हिन्दी साहित्य में स्वच्छंदतावाद यानि छायावाद के अनुरूप माना गया है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं जिन्हें छायावाद के प्रमुख स्तंभ भी कहा जाता है। सन् 1935-36 के आसपास छायावाद के अंतर्गत एक नई प्रवृत्ति विकसित हुई; जहाँ एक तरफ राष्ट्रवादी प्रवृत्ति थी वहीं दूसरी तरफ प्रेम, यौवन और मस्ती के गीत भी गाये जाने लगे।

प्रकृति, मानव, प्रेम और सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी सूक्ष्म अभिव्यंजना करने वाली छायावादी कविता में छाया शब्द को प्रारंभ में व्यंग्य रूप में उन कविताओं के लिए कहा गया जो अस्पष्ट थी। कालान्तर में छायावाद शब्द प्रकृति और मनुष्य के रहस्यमयी अनुभूति एवं सूक्ष्म सौन्दर्य में पड़ने वाली आध्यात्मिक छाया के लिए रूढ़ हो गया। छायावादी कविताओं को स्वच्छन्दतावादी कविता भी कहा जाता है। स्वच्छन्द होने का अर्थ है किसी भी बंधन या रूढ़ियों के जकड़ को न मानना, उनसे स्वतंत्र रहना। यह छायावाद की मूल प्रवृत्ति है; छायावादी कविताओं में मानव-जीवन, समाज और साहित्य की परंपरागत जड़ता से मुक्ति व स्वतंत्र होने का स्वर प्रधान है।

अध्ययन क्षेत्र

आधुनिक हिन्दी काव्य जगत को हिन्दी की विभिन्न काव्यधाराएँ समृद्ध बनाती है। छायावादी काव्यधारा उन्हीं में से अन्यतम है जो काफी व्यापक और विराट है। हिन्दी साहित्य इतिहास में भक्ति काव्य के सदृश छायावाद को भी उत्कृष्ट काव्यधारा माना जाता है। प्रस्तुत शोधालेख में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग कर आधुनिक हिन्दी काव्यधाराओं के अंतर्गत छायावाद का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं छायावादी कविताओं का लिया गया है।

व्याख्या

परिवर्तन, मुक्ति, नवीनता, स्वतंत्रता जैसे शब्दों का प्रयोग 'नये' की अवधारणा को स्थापित करने के लिए होता है। यहाँ 'नया' नए की सृष्टि तथा नए रूप को विकसित करने के अर्थ में प्रयोग हुआ है जो अपने पूर्ववर्ती रूप, स्थिति व धारणा से अलग है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'छायावाद' (1918ई.-1936ई.) पूर्ववर्ती अवधारणाओं से बिल्कुल अलग नवीन जीवन-दृष्टि और शिल्प को लेकर उभरा था। समय निरंतर बदलता रहता है; गतिशील समय के साथ मनुष्य और समाज-व्यवस्था में भी बदलाव आता है, इस बदलाव में भावों, मूल्यों और दृष्टिकोण का बदलना स्वाभाविक है। छायावाद से पूर्व लिखी गई कवितायें समाज तथा मानव-जीवन के बदलते भावों के अनुरूप नहीं थी जबकि छायावादी कवि आधुनिक मानव-जीवन के मानवीय संकटों के प्रति पूरी तरह सचेत हैं। उनके काव्य में अभिव्यक्त भावगत सौन्दर्य जैसे, वैयक्तिकता, राष्ट्रप्रेम, रूढ़िवाद का विरोध, मानवतावादी स्वर आदि को मूल्यबोध से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। सन् 1918ई.-1936ई. के जिस कालखंड को छायावाद युग के नाम से पुकारा गया, आरंभ से ही यह कालखंड आलोचकों में विवाद का विषय बना रहा। आलोचकों का मानना है कि छायावाद शब्द किसी स्पष्ट अर्थ का बोध नहीं कराता; छाया शब्द से अस्पष्टता ही व्यंजित होती है। इस तरह हिन्दी आलोचक-विद्वानों ने छायावाद की प्रवृत्तियाँ, छायावाद की सृष्टि में काम कर रही प्रमुख नवीन चेतनाएँ, सामाजिक परिस्थितियों पर चर्चा करने से कई अधिक छायावाद नाम के स्पष्टीकरण में ही लगे रहे। इस संदर्भ में रामदरश मिश्र लिखते हैं, "यह सारा बवाल इसलिये पैदा हुआ कि सभी लोग छायावादी आन्दोलन की मौलिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण और मूल्यांकन करने के स्थान पर छायावाद नाम के ही पीछे पड़ गये।"[1] छायावाद शब्द में अस्पष्टता पाकर लोगों ने इसका बड़ा मजाक उड़ाया। पन्त लिखते हैं- "छायावाद का प्रधान गुण है अस्पष्टता। भाव इतने अस्पष्ट हो जायें कि वे कल्पना के अनन्त गर्भ में लीन हो जायें।...हमें भाषा को वह रूप देना चाहिए जिससे वह नीरव हो जाए। वह कर्णश्रुत न होकर हृदयगम्य हो, इन्द्रियगोचर न होकर आत्मा से ग्राह्य हो।"[1] अतः आवश्यक यह है कि छायावाद नाम के चक्कर में न पड़कर इस युग में रचित काव्यकृतियों में अभिव्यक्त नये जीवन मूल्यों और कला की वस्तुगत व्याख्या पर ध्यान देना, उनका अध्ययन करना। इस तरह पूर्ववर्ती दोनों युगों से अलग छायावाद को सहज स्वीकारने में आलोचक, विद्वान व पाठकों को भी समय लगा। द्विवेदीयुगीन काव्य जहाँ विषयनिष्ठ, वर्णनप्रधान और स्थूल थी वहीं इसके विपरीत छायावादी काव्य व्यक्ति को केन्द्र में रखकर अपनी कल्पना शक्ति को खुली छूट देकर जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्थितियों को अभिव्यक्त करने में लगी थी। इस काल में अभिव्यंजना पद्धति में भी नवीनता अपनायी गई। द्विवेदीयुगीन काव्य और छायावादी कविताओं में खड़ी बोली का ही प्रयोग हुआ था, पर इस प्रयोग में भी अंतर था। छायावादी कवियों में खड़ी बोली को चित्रात्मक ढंग से प्रयोग किया गया; भाषा अधिक सूक्ष्म होने के साथ वक्र भी बनी। भाषा

के संदर्भ में यह प्रयोग काफी मौलिक और विलक्षण थी। कई विद्वान यह मानते हैं कि छायावाद द्विवेदी युग के विरोध में या उसके प्रतिक्रियास्वरूप आया है परंतु अगर हम ध्यान दे तो इसके विकास के बीज आधुनिक काल के आरंभ से ही धीरे-धीरे उभरने लगे थे। छायावाद द्विवेदी युगीन काव्य परंपरा का ही सहज विकास था। सहज विकास होने पर छायावादी काव्य ने अपने पूर्ववर्ती काव्य परंपरा से अलग हटकर नवीनता को अपनाया जैसे नवीन दृष्टिकोण, नवीन जीवन मूल्य, नवीन सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा जैसे प्रमुख छायावादी कवियों ने अपने पूर्ववर्ती युग की इतिवृत्तात्मकता, नैतिकता और स्थूलता के विरूद्ध सूक्ष्म भावनाओं को स्थापित किया। इनके काव्य में विषय, भाव, भाषा, छंद आदि में नये मूल्यों की प्रतिष्ठा होने के साथ ही राष्ट्रीय चेतना और मानव मूल्यों की भी स्थापना हुई है। छायावादी कविताओं में मानव-मुक्ति का तीव्र आग्रह देखा जा सकता है, जो प्रधान रूप से देशप्रेम, मानवीय समता, सामंतवाद का विरोध, भाषिक प्रयोग में स्पष्ट झलकता हैं।

20वीं शताब्दी के दूसरे दशक में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पूंजीवाद ने पूरे विश्व को अपना ग्रास बना लिया। भारत में तब अंग्रेजों का शासन स्थापित हो चुका था। अंग्रेजी शासन और पूंजीवादी सभ्यता के विस्तार के फलस्वरूप पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं शिक्षा-प्रणाली धीरे-धीरे भारतीय समाज और साहित्य में भी अपना प्रभाव डाल रही थी। इसी बीच भारत में मध्यवर्गीय परिवार की जीवन-चेतना का विकासशील स्वरूप उभरने लगा। देशवासियों के मन में राष्ट्रीय भावना का विकास, नवीन जीवन मूल्यों के प्रति बढ़ती आस्था, पुरानी मान्यताओं, परंपराओं को नकारने की प्रवृत्ति प्रबल हो रही थी। पूंजीवाद के विरोध में पूरे विश्व में जो नयी चेतना जागी उसी के फलस्वरूप हिन्दी साहित्य में छायावादी काव्य निर्मित हुई। युग भले ही परंपरागत जड़ता का विरोध कर एक नये रूप व धारा का विकास करता है पर वह अपने समय और युग की माँग से पूरी तरह कट नहीं सकता। छायावाद युगबोध से संपन्न काव्यधारा रही, फलतः छायावादी काव्य में भी युग क्रान्ति तथा मानव-मुक्ति का स्वर प्रबल रहा। क्रान्तिकारी काव्य के रूप में छायावाद ने जड़ता और रूढ़िवाद के स्थान पर नूतन, भाव, रस, शिल्प और जीवन दृष्टि का निर्माण किया साथ ही जर्जर सामंतवादी मूल्यों को भी ध्वस्त किया। उदाहरणतः प्रसाद की 'कामायनी' और पन्त के 'परिवर्तन' में क्रमशः देव सभ्यता का ध्वंस और सुवर्ण काल को विध्वंस करने का चित्रण हुआ है। यह भी एक तरह से किसी न किसी रूप में एक महान परिवर्तन का संकेत था।

अंग्रेजों के विरूद्ध देश में छिटपुट आंदोलन हो रहे थे। तत्कालीन राजनेता महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में यह आक्रोश धीरे-धीरे बढ़कर स्वाधीनता-संग्राम के रूप में फूट पड़ा। गांधी जी के अहिंसात्मक विचारधारा का व्यापक प्रभाव देशवासियों पर पड़ने के साथ उनकी राजनीतिक चेतना का प्रभाव इस युग के काव्य में भी पड़ा। इसी प्रभाव के चलते राष्ट्रीयता का विकास हुआ, जिसकी अभिव्यक्ति छायावादी कविता में हुई है। हिन्दी कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी आदि ने गाँधीवादी दर्शन को अपने कविताओं मे अभिव्यक्त किया। क्रांतिकारी भावना से परिपुष्ट राष्ट्रवादी भावना को अभिव्यक्त करने वाले कवियों में है बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर आदि। छायावाद युग में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य लिखने वाले कवियों ने दो भावनाओं को पूरी शक्ति के साथ अभिव्यक्त किया। एक तरफ देश की आंतरिक विसंगतियों को दूर करने के लिए देश के अतीत का गौरव गान किया वहीं दूसरे तरफ विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्हें प्रेरित किया। कविता में चित्रित

सांस्कृतिक नव-जागरण, राष्ट्रीय भावना व्यापक भावभूमि पर आधृत है। निराला की कविता 'दिल्ली' में उन्होंने भारत के अतीत का गौरव गान गाया है-

"क्या यह वहीं देश है-
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचर्य-दीप्त
उड़ती है आज भी जहां के वायुमंडल में
उज्जवल अधीर और चिरनवीन?-" (दिल्ली)

वहीं बालकृष्ण शर्मा नवीन ने अपनी कविताओं के जरिये देशवासियों को अंग्रेजों के विरूद्ध जगाने का प्रयास किया-

"ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मज़लूम, अरे चिरदोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का, जाग अरे निद्रा-सम्मोहित!
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे,
अंगारों के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे।" (जूठे पत्ते)

यहाँ जिस परिवर्तन, मुक्ति की बात हो रही है वह केवल विदेशी दासता से मुक्त होने की बात नहीं करता बल्कि सामाजिक रूढ़ियों से मानव की मुक्ति की भी बात करता हैं। छायावादी कविताओं में मानवीय प्रेम को व्यापक परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया गया है। मानव मुक्ति की बात जहाँ हो रही है उसके केन्द्र में वैयक्तिकता की भावना भी है। व्यक्तिनिष्ठ कविता होने के कारण छायावाद में व्यक्तिगत अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्र प्रवृत्ति दिखलायी पड़ती है। वैयक्तिकता या व्यक्तिगत स्वाधीनता अथवा व्यक्तिगत भावों की अभिव्यक्ति छायावादी कविता का प्रमुख स्वर है। 'मेरा अनुराग फैलने दो नभ के अभिनव कलरव में' कहकर प्रसाद ने करूणा और दुख की निष्कृति को आवश्यक मानते हुए उसे आत्मप्रसार का अंग माना है। निराला ने व्यक्तिगत जीवन के सत्य को अभिव्यक्त करते हुए कहा है-

"धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध।
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।।" (राम की शक्ति पूजा)

जीवन भर लोगों के जिस विरोध का सामना कवि को करना पड़ा उसकी गुंज उपर्युक्त पंक्तियों में मिलती है। हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, शिवदान सिंह चौहान आदि अन्य विद्वानों ने छायावाद में अभिव्यक्त व्यक्तिवाद को बहुत ऊँची भूमिका पर प्रतिष्ठित किया। वैयक्तिक स्वाधीनता ने सामंतवादी और पूंजीवादी संबंधों को झकझोर कर रख दिया। व्यक्ति के अपने सुख-दुख को व्यक्त करने की स्वतंत्रता मानवतावादी दृष्टिकोण से सम्पृक्त होती है। मानवीय संवेदना से भरा यह युग मानवतावादी आंदोलन से भी जुड़ा है। बांग्ला के सुप्रसिद्ध कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर के काव्य में व्यक्ति-चेतना की मुक्ति की छटपटाहट से प्रेरित होकर छायावादी कवियों ने व्यक्तिगत अनुभूति और लोकानुभूति को लेकर नयी सृष्टि की। रविन्द्रनाथ ठाकुर ने धर्म की परिभाषा मानव से जोड़कर कहा, धर्म मानवीय संवेदना में हैं, सहानुभूति में हैं। मानवतावादी आदर्शवाद के कारण ही नारी को सम्मानरूप में प्रतिष्ठित और महत्त्व दिया गया है। यहाँ सामंतवादी रूढ़ियों से नारी-मुक्ति की भी बात उठायी गई है। नारी को मध्यकालीन काव्य में साधना मार्ग में बाधक मानकर उसका घोर तिरस्कार किया गया था। पूर्ववर्ती कवि नारी को भोग्या मानकर उसके बाह्य सौन्दर्य के चित्रण में ही डूबे रहे। छायावाद में नवीन सांस्कृतिक चेतना की जागृति के फलस्वरूप नारी-संबंधी दृष्टिकोण में भी व्यापक परिवर्तन आया। नारी-विषयक नवीन दृष्टि अपनाते हुए इस युग के कवियों ने नारी को

मातृत्व का गौरव प्रदान किया, नारी-सुलभ आदर्श गुणों की प्रतिष्ठा कर उसे देवी, महान शक्ति के रूप में सम्मानित किया, नारी इस युग में जीवन-सहचरी बनी। पन्त ने नारी के प्रति अपने आदर को व्यक्त करते हुए कहा है-

"तुम देवि! आह कितनी उदार,
वह मातृ मूर्ति है निर्विकार।
हे सर्वमंगले! तुम महती,
सबका दुख अपने पर सहती।।" (दर्शन सर्ग, कामायनी)

नवीन दृष्टिकोण के कारण छायावाद जिस तरह अपने पूर्ववर्ती काव्यधारा से पृथक हो गया, उसी तरह काव्य शिल्प व शैली के संबंध में भी छायावादी काव्य ने पूर्ववर्ती परंपरा से अलग हटकर नवीन मार्ग को अपनाया। इस दृष्टि से छायावाद को कलागत आंदोलन कहना भी गलत नहीं होगा। चित्रमयी भाषा के साथ कोमलकांत पदावली, ललित पद-विन्यास छायावादी कविता की प्रमुख विशेषता है-

"मृदु मंद-मंद मंथर-मंथर
लघु तरणि हंसिनी-सी सुन्दर
तिर रही खोल पालो के पर।" (नौका विहार, पन्त)

शब्दों के चयन और निर्माण में छायावादी कवियों ने स्वतंत्र शब्द अपनाकर उनका प्रयोग लयमय क्रम में किया। उदाहरणतः प्रसाद के शब्द अधिक प्रगाढ़, मधुमय है वहीं सुमित्रानंदन पंत ने अपेक्षाकृत छोटे, असंयुक्त वर्ण के शब्दों का प्रयोग किया। निराला के शब्द चयन में विविधता मिलती है, उन्होंने संधि-समास युक्त शब्दों का प्रयोग किया। महादेवी वर्मा के शब्द स्पष्ट और तेज है। कई कई जगह पर मधुर ध्वनि वाले शब्दों के मोह में पड़कर आवश्यकता से अधिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। शब्दों के साथ छन्दों के प्रयोग में भी छायावाद में नवीन प्रयोग हुए हैं। परंपरागत छन्दों के स्थान पर स्वच्छन्द या मुक्तक छन्द का प्रयोग हुआ। कविता व्यक्ति-मन के भावों को व्यक्त करती है। भावों के इस स्वच्छन्द अभिव्यंजना में चरण, तुक आदि बाधक बनते हैं, अतः निराला ने इन सबके बंधनों को ढीला कर दिया। निराला ने ही सर्वप्रथम कविता में मुक्त छन्द का प्रयोग किया। उनका मानना था कि छंद का बंधन कविता को उसके प्रकृत रूप में अभिव्यक्त नहीं होने देते। छन्द के बन्धन को अस्वीकार करके उन्होंने मात्रा और वर्ण के बन्धनों को तोड़कर मुक्त वृत्तों को प्रयोग किया। निराला ने छन्द मुक्ति को मनुष्यों की मुक्ति से जोड़ा; तत्कालीन विदेशी शासन से मुक्ति का यह आह्वान था साथ ही एक क्रान्तिकारी कदम भी। मुक्त छन्द काव्य के बाह्य सौन्दर्य की बात नहीं करता बल्कि यह एक क्रांतिकारी सामाजिक बदलाव का भी सूचक है। ध्यान देने योग्य है कि जिस मुक्त छन्द को आलोचक, संपादक रबड़ या केंचुवा छन्द का नाम दिया आज वही छन्द हिन्दी कविता की मुख्यधारा बन चुकी है।

निष्कर्ष

छायावादी कविता की भावभूमि वैयक्तिक है। इस व्यक्ति सत्ता के मूल में मनुष्य के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। लौकिक भावभूमि पर प्रतिष्ठित होने के कारण छायावादी कविताओं में कवि की भोगी हुई अनुभूतियों की अभिव्यक्ति यथार्थ धरातल पर हुई है। आत्माभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण ही छायावादी कविताओं में मुक्ति का आग्रह स्पष्टतः झलकता है। परंपरागत जड़ता के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए छायावादी कविताओं ने नए मार्ग का अन्वेषण किया। यह नया मार्ग उदात्त मानवतावादी प्रवृत्ति के कारण मानव-मुक्ति की बात करता है; मुक्ति के इसी आग्रह में विश्वमंगल की व्यापक भावना समाहित है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद युग साहित्यिक विधा, विषयवस्तु और भाषागत नवीनता की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण रहा है। इस प्रकार जिस तरह भक्ति काव्य को 12वीं सदी का सांस्कृतिक पुनरूत्थान कहकर हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा गया उसी तरह 19वीं-20वीं सदी का सांस्कृतिक जागरण कला-सौष्ठव से परिपूर्ण छायावादी काव्य में देखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन
2. छायावाद का रचनालोक - रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन
3. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. छायावाद के प्रतिनिधि कवि - डॉ. विजयपाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. हिन्दी प्रतियोगिता साहित्य- डॉ. अशोक तिवारी, साहित्य भवन, उ.प्र. https://www.hindisamay.com